Sahyog Disability Etiquette & Language

3rd June 2016

1. Megha Dharnidarka

pg no 5:

I think the first line is very powerful. We give them a special name to pay lip service to affirmative action and satisfy our own unease. Through different terminology we specialize and marginalize them. We ensure that they form a separate category that needs to be treated specially and separately. It's like the segregated United States philosophy of separate but equal for African Americans. We cannot accept that they are like us and we could have common interest or aspirations. We victimize and infantilize them instead of treating them like any other member of society. We harp on their "special needs" while forgetting that we all have unique and specific conditions and environments in which we function optimally as well. I think this page emphasizes that we need to see people with disabilities as people first and their disability as only one facet of who they are.

2. Bilquis Shaikh

पेज नं 10

अच्छा,आप अपने चारो ओर अगर ध्यान से देखे.....

एक दिन मै ने एक रिक्शा चलाने वाले को देखा जिसे एक हाथ ओर एक पेर मे चलने मे दिक्कत थी पर वेह रिकशा चला रहा था । देख कर मेरे रोंगते खडे होगए । हर इंसान अपने आप मे अलग ओर खास है ।

जरुरत है तो बस हर कोई अपनी शमता को पेहचाने.....

अपने आस पास देखे ओर अपने मीत्र जीन्हे रोजमररह के काम करने

दिक्कत हे उन्हे मोटीवेट करे । ऐसे विकलांग मनुष जो विविध व्यवसायो से

जुडे है ओर हमे उनसे जुडने के लिए भाषा का सही प्रयोग बहुत जरुरी है

हम सब को अगर कोई पहले ईसान मानकर बात करे तो अच्छा लगता है ओर उसी तरह हम अपने आप को देखते है । वो ही शब्द हमारी सोच बनती है, ओर सोच हमारे व्यवहार पर असर करती है । अगर यह सब नकारात्मक हे तो उनके जीवन की रुकावट बन सकता है ।

रीतीका जी के वर्कशोप से भाषा की अहमयित पता चली । आस पास की जिंदगी और अपने काम मे ईस सीख का उपयोग करुंगी ।

मै बच्चो को किताबो के जरीए कहानी के जरीए ईस जानकारी को सब तक पोहचाउंगी ।

3. Ruvina Fernandes

Pg 3

I am reminded of the beautiful quote of Hellen Keller “Tell me and I forget, teach me and I remember, involve me and I LEARN “Many times as educators & social workers, we begin with so much of enthusiasm and somewhere between we forget our purpose. We take on the ownership towards the individual right to participate in his/her future. Hand down approach is not the solution, this will only reinforce our past stereotypical behaviors to linger but hand in hand approach would ignite a new way of looking and doing things. We need to remind ourselves, everybody has a voice irrespective of their orientation (Gender/ State of Mind or Body). It is in the each other’s uniqueness and diversity that beauty lies and there is only Us/We no more you and They.

I enjoyed the session; it was good to recall things learnt during the course, videos captured the essence of the sessions. As an ngo working in field of disability, it is good to be thinking and working towards inclusion in words and take it forward to the communities we work with .

4. Zahida Shaikh

Pg 7

विकलांग इसान के साथ में प्यार से बात करनी चाहिए , पेहले उन की बात सुनना है , फिर अपनी बात करनी है । जियो और जीने दो ।

5. Gulshan Khan

भाषा के इस वर्कशॉप से हमने यह सिखा कि भाषा का महत्व जिस तराहा हमारे जिवन में महत्व रखता हैं उसी तराहा विकंलाग व्याक्ती के लिए महात्व रखता हैं हम जाने अनजाने में उन के साथ बात करते समय ऐसे शब्दो का प्रयोग करदेते हैं जिसे उन को तकलिफ होती हैं । हमारे मन में उन के लिए जो हमदरदी औंर सोच हैं वह बदल कर देखे वह भी हमारी तराह इंसान हैं बस उन के शरीर का एक अंग ऐसे हैं जिस में समस्या हैं उन के समस्या वाले अंग को हम उन के नाम के साथ जोड नही सकते समाज में सही भाषा का उपयो करे ताके किसी को तकलिफ ना हो

6. Aasiya Shaikh

विकंलाग लोगो को देख कर हमारे मन मैं कई सवाल उठते हैं जैसे की बिचारा जो देख नही सक ते है कैसे चल सकता हैं इन सवालो के जवाब हमे तब मिलेंगे जब हम उन के साथ समय बिताऐंगे तो हमे पता चलेगा के वहा भी सब काम कर सकते हैं जो हम करते हैं बस उन्हें समय लगता हैं मगर वह करते हैं

रितिका जी ने जो भी जानकारी दिए भाषा के बारे में जैसे के स्पेशल ना बोलते हुए हम ऐसे शब्दो का उपयोग करे जैसे :बहेरा बोलने के बजाए हम कर्णबधिर, अंधा बोलने के बजाए हम नेत्रहीन इन शब्द का उपयोग करें रितिका जी ने हमे वह विडियो देखाया था उस को देखकर लगा की विकंलाग लोग भी आम इंसान कि तरहा हैं वह भी खेल सकते हैं और काम कर सकते हैं
इंसान को देखो उस की विकंलाता को मत देखो वह भी इंसान हैं हमारी और तुमारी तरहा सिंफ मोके कि जरुरत हैं

7. Sandhya Kamble

   Ms. Sahani gave important information regarding disability language. before the workshop we easily used some word like Special, Normal but now in future i will be taking care when i using this word because it's true this word making discrimination.

   Book Feedback Page No- 4- :- :"Disabled" and abnormal this word making discrimination. we are doing sympathy with disabled people because we are looking just them disability but we are forget they are capable and they can change them life. don't do any kind of label on disability, called them on the them own name. "they don't want sympathy they want empathy".

8. Swati Gije

   I would like to say thanks to Ms. Ritika Sahani for conducting session on “how to behave or how to interact with physically or mentally challenged person”. Yes I agree. A child is only as disabled as their environment and the people around them. Nobody chose to word disability and we all need to understand this.

   Feedback on page No. 3 :

   Being disabled or abnormal should not mean being not enjoying every aspect of life. Disability is natural. We must stop believing that disabilities keep a person from doing something. It is not true disability doesn’t stop to doing everything. They don’t have disability, they have different ability to do everything.

9. Rabiya Ansari

   Pg 6

   मुझे रितीका मेम का प्रोग्राम अच्छा लगा, रितीका मेम ने विडियो दिखाया जिस मे हर डिसेबलटी के बारे मे बताया था । फिजिकल, श्रवण यंत्र, कीसी को दिखाई नही देता । वे भी अविकलांग लोगों के जेसै लिखाई , पढाई कर सकते है ।

   खेल में भाग ले सकते है। डॉक्टर , इंजीनीयर, बन सकते है। डास और करतब भी करते है, लेकिन लोगो की धारणा है के वे ये सब नही कर सकते है और उन्हें आगे बढने का मोका नही देते है । उन्हें भी मोका देना चाहीए के वे क्या

करना चाहेते है । वे भी और लोगो की तरह है, हम सब में कोई ना कोई कमी है । फिर उन लोगो को असमान्य क्यों कहते है, क्यों की उन की कमी दिखाई देती है और मन सब का दिखाई नही देता है । इसी लिए पहेले हमे अपने अंदर की कमी देखना चाहीए बाद मे दुसरो की ।

10. Tanveer Kaur

Pg 2

"मुझे लेकर तुम्हारे मन में उठते होगें कई सवाल"

मुझ कार्यशाला से बहूत नोलेज मिली जैसे की भाषा की समझ । यह बात तो सच्ची है, जन मनुष्यों में विकलांगता होती है , हमारे मन में उनके बारे यई विचार आता है , की वह जिन्दगी मे कभी कामियाब नही हो सकते , परंतु यह हमारा वहम है ।

जो अपंगता से पीडीत होते है, वह वो सब कुछ कर सकते है जैसे अविकलांग व्यक्ती करते है । हमे , अपंगता या ,विकलांगता से पीडीत मनुष्यों को अपने से अलग नही समझना चाहिए । हमे उनसे और दोस्ती करके उनके विचार और खयाल के बारे जानना चाहिए ।

मैने एसे कई मनुष्यों को देखा है, जो कसी दुर्घटना के कारण अपंगता से पीडी त हो गए । मेरी बेटी के स्कूल में एक औरत अपने बच्चो को स्कूल छोडने और लेने आती है, उसका एक पैर नकली है पर वह अपनी जिन्दगी के सब कार्य आसानी से करती है । एक इन्सान मैने अपने सनसंग घर मे देखा , जिनका किसी दुर्घटना के करण एक आत कट गया , लेकिन वह गाड़ी बहूत आच्छा चलाते है और डेरे मे सेवा भी करते है ।

मेरे मायके मे यहाँ एक लड़का है जिसे कई लोग पागल , बेवकूफ कहते है, मंदबुद्धी कहते है क्यो कि उसकी हरकते कुछ अजीब तरह की होती है , लेकिन वह अपने स्कूल का टोपर है । गणित मे बहूत समझदार है । वह किसी भी बातों का बुरा नही मनता है । मुझे यह देखने में उसे मानसिक विकलांगता लगती है , पर वह पढ़ाई मे टॉप करता है ।

रितीका जी का बहूत शूकिया ताकि उन्होने हमे अच्छी और समझदारी की बाते बताई ।

11. Ganesh Kharat

रीतीका सहानी मॅडम चा कार्यशाळा माला चांगला वाटला, भिन्न क्षमतांच्या व्यक्तींशी कशा पडतीने संवाद करायच य्याची थोगी समानत महिती मिळाली . तसेच त्यांच्याशी संवाद साहसताना कोणते सन्मानयूक्त शब्दांचा वापर करायचा ते महिती मिळाली , तसेच त्यांना जे वेगवेगळ्या / भिन्न क्षतमतांच्या व्यक्तींचे जे व्हिडियो दाखवले , तेही खूप चांगले होते . सर्वात महत्त्वाच ह्या व्यक्तींशी आपन जी नकारात्मक भूमिका ठेवतो ती पहिल्यांदा बदलली पहिजे आणि इतरां बाडी मिळाली.

Pg 6

सर्वजन अशा व्यक्तींबादलू सहानुभूती दया दाखवतात, पण ह्या पेक्षा त्यांना प्रेम मिळन गरजेच आहे, पण त्या प्रेमच्चा भाशा व्यकतींनी गैरफायदा नाही घेतला पाहीजे आणि स्वताहून आम्ही पण तुमच्या सारखच आहोत अशी भावना वाटली पाहीजे, अशा भिन्न क्षमतांच्या व्यक्ती प्रेमाणा गैरफायदा घेतात, त्यांचा अलीकडे अनुभव आला .

उदाहरणार्थ मी संध्याकाळच्या वेळी रिक्शा पकदण्यासाठी रांगेत उभा होतो, रांग थोडी मोठी होती आणी जसा माझा नंबर येतो, एक ठेंगणी बाई अचानक माझ्या मागून येते आणि मला बाजूला करुन न रांग लावता रिक्शात बसते आणि रांगेतली सर्व व्यक्तींनी बघीतल पण तिला कोणी काही बोलल नाही तर ही कोण ती सहानुभूती ??

ह्या ठेंगणी बाईला समान वागनूक तरी ती रांगेत उभी राहीली असती आणी रांग लावली असती. तिने तिच्या विकलांगता आणि लोकांचा सहानुभूतीचा फायदा गेतला . आशा खूप विकलांग व्यक्ती आपल्या विकलांगतेचा फायदा घेता.

12. Saba Khan

अब"हम"और "वो" के बीच की दुरी को मिटाना जरुरी हैं क्यों कि मेरा "और तुम्हारा" ये अन्तर लाती मनुष्यता मे दुरी हैं में सोचती हु की हम सब एक दुसारे अलग है तो अच्छ

और बुरा का यह कहा से आया जब में पहले हमारे दोस्तो को मिलती थी तो मुझे भी दया की भवाना आती थी कभी मेने भी नही ये सोच था की उन्हें कैसे लगता है कभी यह नही

सोच की उन्हें मेरी जरुरत हैं की नही

इस वाकसोप से मेने यह सीखा

13. Jabin Khan

सेशन से यह सिखने मिला के हम कई बार बच्चे जो विकलांग है उन्हें स्पेशल या अबनॉरमल बुलाते है । हमे अपनी भाषा पर ध्यान देना चाहिए । उन कौ विकलांगता को ना देखते हुए उनकी काबिलियत को समझना चाहिए । हमे यह भी समझना है सब से पहले हमइनसान है विलांगता किसी को भी ,कही भी, कहीं भी हो सकती है ।